प्रातःक्लास 14/5/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठकर समझाते हैं। सुबह को बैठ मदद देते हैं; क्योंकि यहां सम्मुख हैं। ऐसे नहीं कहेंगे सभी अपने स्वधर्म में रहते हैं और बाप को याद करते हैं। कहां न कहां बुद्धि ज़रूर जाती होगी। वह तो हरेक अपने को समझे। मूल बात है सतोप्रधान बनने की। सो तो याद की यात्रा से बन सकेंगे। भल बाबा सुबह को बैठ बच्चों को खैंचते हैं, कशिश करते हैं 2 नम्बरवार ही खैंचते जाते हैं। याद में, शान्ति में रहते हैं, दुनियां को भी भूल जाते हैं; परन्तु सवाल है सारे दिन में क्या करते हैं। वह तो हुई सुबह को घंटा आधा याद की यात्रा जिसमें आत्मा पवित्र बनती है, आयु बढ़ती है; परन्तु सारे दिन में कितना याद करते हैं कितना स्वर्शनचक्रधारी बनते हैं। ऐसे नहीं कि बाबा तो सभी कुछ जानते हैं। अपने–2 दिल से पूछना है, सारा दिन क्या किया? अभी तुम बच्चे चार्ट लिखते हो कोई राइट लिखते हैं कोई रांग लिखते हैं। समझेंगे हम तो शिवबाबा के साथ ही हैं, शिवबाबा को ही याद करते थे; परन्तु सचमुच याद में थे? बिल्कुल सायलेंस में रहने से फिर यह दुनियां भी भूल जाती है। अपन को ठगना नहीं है। हम तो शिवबाबा की याद में हैं। देह के सभी धर्म को भूल जानी है। हमको शिवबाबा कशिश कर सारी दुनियां भुलाते हैं। बाप समझाते हैं अपन को आत्मा (समझ) बाप को याद करना है। बाप तो कशिश करते हैं सभी आत्माएं बाप को याद करें। और कोई भी याद न आवे; परन्तु सचमुच याद आती है वा नहीं वह तो खुद ही जाने। ऐसे नहीं बाबा जानी–जाननहार है। अपन को समभाल आपे ही करनी है। बाप डायरैक्शन देते हैं फिर सारा दिन क्या करते हैं। वह तो खुद पोतामेल निकालें। कितना हम बाप को याद करते हैं। जैसे आशुक–माशुक का मिसाल। यह आशुम–माशुक है रूहानी। बातें ही न्यारी हैं। वह जिस्मानी, यह रूहानी। देखना है हम कितना समय दैवी गुणों में रहे। कितना सम(य) बाप की सेवा में रहे। फिर औरों को भी याद दिलानी है। आत्मा पर जो कट चढ़ी है वह याद करने बिगर तो उतरेगीं नहीं। भक्ति मार्ग में अनेकों (को) याद करते हो। यहां याद करना है एक को। हम आत्मा छोटी बिन्दी हैं तो बाबा भी छोटी बिन्दी है। बहुत–2 सूक्ष्म है। नॉलेज है बड़ी। श्री ना. वा ला. विश्व का मालिक बनना कोई मासी का घर नहीं है। बाप कहते हैं अपन को मियां मिट्ठू समझ ठग न देना। अपन से पूछो, सारे दिन में हम कितना समय अपन को आत्मा समझ बाप को याद किया जो कट निकले। कितने को आप समान बनाया। यह पोतामेल हरेक को अपना रखना है। बाबा थोड़े ही बैठ देखेंगे। हरेक को अपने लिए रजिस्टर रखना है। डायरियां तो हैं। डायरियां स्थूल काम में भी आ सकती हैं तो सूक्ष्मकाम में भी आ सकती हैं। जो करेगा सो पावेगा। न करेंगे तो पछतावेंगे। देखना है हमारा कैरेक्टर सारे दिन में कितना रहा। कोई को दुःख तो नहीं दिया। या फालतू बात तो नहीं की, चार्ट रखने से कैरेक्टर सुधरेगी। बाबा ने रास्ता तो बताया। आशुक–माशुक एक दो को याद करते हैं। याद करने से वह सामने खड़ा हो जाता है। दोनों स्त्री हैं तो भी सा. हो सकता हैं। दोनों पुरुष है तो भी सा. हो सकता है। कोई–2 मित्र तो भाई से भी तीखे होते हैं। मित्रों का आपस में कितना लव हो जाता है। जो भाईयों में भी न हो। एक को बहुत प्यार से अच्छा उठा लेते हैं। बाबा तो अनुभवी है ना। तो सवेरे में बाप जास्ती कशिश करते हैं। चकमक है एवर प्योर तो वह खैंचते हैं। बाप तो ऐसे ही कशिश करेंगे जो तुम एकदम पकड़ लो; परन्तु इतने सभी कैसे पकड़ेंगे। बाप तो है बेहद का। वह तो समझते हैं यह बहुत ही लवली बच्चे हैं। बहुत ही ज़ोर से प्यार करते हैं। प्यार में कशिश होती है; परन्तु यह तो है थोड़े ही टाइम के लिए। बाबा ने यह प्रोग्राम क्यों रखा है; क्योंकि याद की यात्रा बहुत ज़रूरी है। कहां भी जाते हो, मुसाफिरी कहते हो, उठते–बैठते, खाते–पीते याद कर सकते हैं। आशुक–माशुक कहां भी बैठें याद करते हैं ना। यह भी ऐसे हैं। बाप को याद तो करना ही है। नहीं तो विकर्म कैसे विनाश हों। और कोई उपाय नहीं। यह बहुत–2 महीन है। तलवार की धार से चलना होता है। याद है तलवार की धार? घड़ी–2 कहते हैं याद भूल जाते हैं। तलवार क्यों कहते हैं; क्योंकि इनसे पाप कटेंगे। तुम पावन बनेंगे। यह बहुत नाज़ुक है। जैसे वह लोग आग से, पानी से पार करते हैं। तुम्हारा फिर बुद्धि को(का)

योग चला जाता है बाप के पास। बाप आये हैं हमको यहां शिक्षा देते हैं। ऊपर में नहीं हैं। यहां आये हैं। कहते हैं मैं साधारण तन में आता हूँ। तुम जानते हो बाप ऊपर से नीचे आया है। चैतन्य हीरा इस डबली में बैठा है। सिर्फ़ इसमें खुश नहीं होना है। हम बाबा के साथ बैठे हैं। यह तो बाबा जानते हैं बहुत कशिश करते हैं; परन्तु यह तो हुआ आधा घंटा, पौना घंटा; परन्तु सारा दिन वेस्ट गंवाया तो क्या फायदा। बच्चों को अपने चार्ट का बहुत आना रखना है। ऐसे नहीं कि हम तो भाषण कर सकते हैं, चार्ट रखने की हमको क्या दरकार। यह भूल न करनी है। महारथियों को भी चार्ट रखना है। महारथी बहुत नहीं हैं, गिने–चुने हैं। बहुतों का तो नाम–रूप में टाइम बेस्ट हो जाता है। मंज़िल बहुत ऊँची है। बाप सभी कुछ समझा देते हैं। जो स्टूडेन्ट ऐसा न समझे कि बाबा ने फलानी प्वाइन्ट्स न समझाई। यह है मुख्य। याद और सृष्टि चक्र। इस सृष्टि चक्र को, 84 जन्मों को तो कोई नहीं जानते, सिवाय तुम बच्चों के। वैराग्य भी तुमको आवेगा। तुम जानते हो इस मृत्युलोक में अभी रहने का नहीं है। जाने से पहले पवित्र बनना है। दैवी गुण भी ज़रूर चाहिए। नम्बरवार माला में पिरोने हैं। फिर नम्बरवार राजधानी में आनी है। फिर नम्बरवार तुम्हारी भी पूजा होती है। क्या–2 नाम रखते हैं। चण्डिका देवी का भी मेला लगता है। जो रजिस्टर नहीं रखते हैं तो चण्डिका ठहरे ना। कोई सुधरते नहीं हैं तो कहा जाता है ना यह तो कोई चण्डी है। सुनते ही नहीं। मानते नहीं। यह फिर (है) बेहद की बात। नहीं करेंगे तो बाप कहेंगे यह बाप के भी मानने वाले नहीं हैं। पद भी कम हो जावेगा; इसलिए बाप कहते हैं, अपने ऊपर बहुत नज़र रखनी है। बाबा सवेरे आकर कितनी मेहनत कराते हैं, याद की यात्रा की। यह बहुत बड़ा माल है नॉलेज को तो सुस्ती सबजेक्ट्स कहेंगे। 84 के चक्र को याद करना बड़ी बात नहीं। बाकी बड़ा(बड़ी) माल(बात) है याद की यात्रा। जिसमें फ़ेल भी होते हैं। तुम्हारी युद्ध भी इसमें है। तुम याद करते हो माया पछाड़ देती है। नॉलेज में युद्ध की बात नहीं। वह तो सोर्स ऑफ इनकम है। यह तो पवित्र बनना है लायक होने लिए; इसलिए ही बाप को बुलाते हैं कि आकर पतित से पावन बनाओ। ऐसे नहीं कहते कि आकर पढ़ाओ। कहेंगे पावन बनाओ। तो यह सभी प्वाइन्ट्स बुद्धि में रखनी है। पूरा राजयोगी बनना है। नॉलेज तो बहुत सिम्पुल है। सिर्फ़ युक्ति से समझाना होता है। ज़बान में मिठास भी चाहिए। तुमको यह ज्ञान मिलता है वह भी कर्मो अनुसारा कहेंगे। शुरू से लेकर भक्ति की है तो यह अच्छे कर्म किये हैं ना; इसलिए शिवबाबा भी अच्छी तरह से बैठ समझाते हैं। जितनी जास्ती भक्ति की होगी, शिव बाबा राज़ी हुआ होगा तो अभी भी ज्ञान जल्दी उठावेंगे। महारथियों की बुद्धि में प्वाइन्ट्स बैठती होगी। लिखते रहें तो भी अच्छी–2 प्वाइन्ट्स अलग करते रहें। प्वाइन्ट्स का वज़न करें; परन्तु इतनी मेहनत तो कोई करते ही नहीं। मुश्किल कोई नोट रखते होंगे अच्छे प्वाइन्ट्स निकाल अलग रखते होंगे। बाबा हमेशा कहते हैं भाषण करने पहले लिखो। फिर जांच करो। ऐसे मेहनत करते नहीं हैं। सभी प्वाइन्ट्स किसको याद नहीं रहती। बेरिस्टर लोग भी प्वाइन्ट्स नोट करते हैं। तुमको तो बहुत ही ज़रूरी है। टॉपिक लिखकर फिर पढ़ना चाहिए। करैक्शन करना चाहिए। इतनी मेहनत न करेंगे तो उछल नहीं खावेंगे। तुम्हारा बुद्धि योग और तरफ भटकता रहेगा। बहुत थोड़े हैं तो सरलता से चलते हैं। सर्विस बिगर और कुछ भी बुद्धि में नहीं रहता। माला में आना है तो मेहनत करनी चाहिए। बाप तो मत देते हैं। फिर दिल से लगती है वा नहीं वह तो खुद ही जाने। भल धंधा–धोरी आदि करो। डायरी तो सदैव ही पॉकेट में रहनी चाहिए, नोट करेन लिए। सबसे जास्ती तुमको नोट करना है। अपन को मिया मिट्ठू समझेंगे तो माया भी कोई कम नहीं। घूसा लगाती रहेगी। ल.ना. बनना मासी का घर नहीं। बड़ी सलतनत स्थापन होती है। कोटों में कोई निकलेंगे। हमको तो इस समय कोई ऐसे देखने में नही आते। कहेंगे म(मे)मा क्या करती थीं? प्वाइन्ट्स लिखवाती थीं। वह तो किताब में ही रहती थी। रोज़ देखतीी थोड़े ही थीं। बाबा तो कहते हैं, नोट कर फिर देखो। लिखने की मेहनत चाहिए। बाबा भी सवेरे–2 दो बजे उठकर लिखते थे। फिर पढ़ते थे। प्वाइन्ट्स भूल जाते थे तो फिर लिखते थे, तुमको समझाने लिए। जो भी बच्चे गये हैं, जल्दी में क्यों गये। कोई कारण भी होगा। समझा

जता है कहां है वह याद की यात्रा, कहां है वह कर्मातीत अवस्था। मुफ्त में किसकी बड़ाई नहीं करनी होती है। बड़ी मेहनत है। इनको भी कर्म–भोग कहा जाता है। भोगना तो इनको भी पड़ता है ना। याद करना पड़ता है। अच्छा, मु(र)ली समझो ब्रह्मा नहीं शिवबाबा चलाते हैं; परन्तु यह तन्दी भी तो चलाते होंगे। बच्चों के सदैव समझाते हैं कि शिवबबा ही समझो। वह सुनाते हैं। कब बीच में यह भी बोल देते हैं। बाबा भी बिल्कुल एक्युरेट ही कहेंगे। यह बीच में इनटरफियर कर बोलते हैं। कच्ची–पक्की प्वाइन्ट्स कब निकल जाती होगी तो समझो इनकी है। इनको तो सारा दिन बहुत ख़्यालात करनी पड़ती है। कितनी बच्चों की रेसपॉन्सीबुलिटी है। कोई ब्राह्मणियां भी नाम–रूप में फंस, चलायमान हो जाती हैं। जैसे तोता बन बैठ समझाती हैं। बच्चों के लिए मकान बनाने यह सेवन्ज करनी है। है तो यह सभी ड्रामा। बाबा का भी ड्रामा, इनका भी ड्रामा, तुम्हारा भी ड्रामा। ड्रामा बिगर कोई भी चीज़ होती नहीं। सेकण्ड व सेकण्ड ड्रामा चलता है। ड्रामा को याद करने से हिलेंगे नहीं अडोल, अचल, स्थिरियम रहेंगे। तूफान तो बहुत आवेंगे। कई बच्चे सच्च नही बताते हैं। सबसे जास्ती तूफान तो इनको आवेंगे। नहीं तो औरों को समझाऊँ कैसे। स्वप्न भी ढेर आते हैं। माया है ना। न आने वाले को भी आवेंगे। बाप समझ जाते हैं बच्चों को वर्सा पाने लिए याद करने में कितनी मेहनत करनी पड़ती है। कोई–2 मेहनत करते–2 थक जाते हैं। मंज़िल बड़ी भारी है। 21 पीढ़ी विश्व का मालिक बनना है। तो मेहनत भी करनी पड़े ना। लवली बाप को याद करना पड़े। दिल में रहता है बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। ऐसे बाप को तो घड़ी–2 याद करना चाहिए। सबसे प्यारा बाबा है। स्त्री, पति को कितना प्यार करती है। वह तो खड्ढे में डाल देते हैं। यह बाबा तो कमाल करते हैं। विश्व की नॉलेज देते हैं। बाबा–बाबा –बाबा कह अन्दर में महिमा गानी पड़े। बहुत–2 लव रहता है। जो याद करते होंगे उनको कशिश होगी। यहां आते ही हैं बाप से रिफ्रेश होने। तो बाप समझाते हैं मीठे बच्चे गफ़लत न करनी है। बाबा देखते हैं सभी सेन्टर्स से आते हैं। देखता हूँ, पूछता हूँ किस प्रकार की खुशी है। बाबा जांच तो करते हैं। सिकल से भी देखते हैं, बाप से कितना लव है। बाप के सामने आते हैं तो बाप कशिश करते हैं। यहां बैठे–2 सभी भूल जाते हैं। बाबा बिगर कुछ भी नहीं। सारी दुनियां को भुलाना ही है। वह अवस्था बड़ी अलौकिक, मीठी होती है। बाप की याद में आकर बैठते हैं तो प्रेम के आँसू भी आ जाते हैं। भक्ति मार्ग में भी आँसू आते हैं; परन्तु भक्ति मार्ग अलग है। ज्ञान मार्ग अलग है। यह है बेहद के साथ सच्चा प्रेम। यहां की बात ही न्यारी है। यहां तुम शिवबाबा के पास आते हो। ज़रूर रथ पर सवार होगी। बिगर शरीर तो आत्माएं वहां मिल सकती है। यहां तो सभी शरीरधारी हैं। जानते हैं यह बाप दादा हैं। तो बाप को याद करना पड़े। बहुत प्यार से महिमा करनी है। बाबा हमको क्या देते हैं। भक्तों को मालूम थोड़े ही पड़ता है कि हमको क्या मिलता है, कुछ भी नहीं। समझो करके सा. होता है। मिलता कुछ भी नहीं। पुनर्जन्म तो लेते रहते हैं। तुम जानते हो बाबा आया हुआ है इस जंगल से ले जाते हैं। मंगलम भगवान विष्णु..... कहा जाता है ना। सबको मंगल करने वाला हरि है । सभी का कल्याण होता है। एक ही बाप है उनको याद करना है। नॉलेज धारण करनी है। हम क्यों नहीं किसका कल्याण कर सकते हैं। ज़रूर कोई खामी है। बाप कहते हैं याद का जौहर नहीं; इसलिए वाणी में भी कशिश नहीं होती। यह भी ड्रामा। अभी फिर अच्छी तरह से जौहर धारण करो। याद की यात्रा ह(ी) मुश्किल है। हम भाई को ज्ञान देते हैं। हम सभी भाई–2 हैं। भाई को बाप का परिचय देते हैं। बाप से ही वर्सा पाना है। बाबा फ़ील करते हैं, घड़ी–2 भूल जाते होंगे। बाप कहते हैं मैं तो सभी को बच्चा समझता हूँ। बच्ची–2 यह कहता होगा। यह बाप थोड़े ही है। यह उथल–पाथल बाबा के आगे बहुत ही आती है। वण्डरफुल पार्ट है। बाप तो कहेंगे, मेरे सभी बच्चे हैं। यह कहेंगे, बहन–भाई हैं। वण्डरफुल पार्ट है ना। भाई–2 कह बात करता होगा। यह भी हिरा हुआ है। देही अभिमानी तो बना न है। बहुत थोड़े समझते होंगे। कि यह अक्षर किसके हैं। बाबा तो क(ब)च्चे ही कहेंगे। आया ही है बच्चों को वर्सा देने। अच्छा बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।